मेसोपोटामिया (इराक) के प्रारम्भिक शहरी समाज का स्वरूप [Nature of the Early Urban Societies of Mesopotamia (Iraq)]

मेसोपोटामिया सभ्यता के आरम्भिक शहरी समाज के स्वरूप का विस्तृत अध्ययन हम पूर्व में सुमेर, बेबीलोनिया एवं असीरियन सभ्यता के तहत कर चुके हैं। विद्वानों ने सुमेरियन समाज को भौतिकवादी, बेबीलोनियन समाज को यथार्थवादी एवं असीरियन समाज को निर्दयी कहा है। अत: मेसोपोटामिया की संस्कृति को हम इन सभी तत्वों का सम्मिश्रण कह सकते हैं। प्रारम्भिक काल में इस सभ्यता में छोटे-छोटे नगर राज्यों का अस्तित्व था। नगर राज्यों के शासक प्राय: पुरोहित होते थे। प्रत्येक नगर का एक अपना देवता होता था एवं नगर में उसका एक भव्य ऊँचा (जिगुरात) मन्दिर होता था। आरम्भिक समाज का मानना था कि देवताओं की कृपा से फसल अच्छी होती है, बीमारियाँ दूर होती हैं एवं युद्ध में शत्रु परास्त होते हैं। आरम्भिक शहरी समाज के लिये मन्दिर ही ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा, चिकित्सा एवं कला के केन्द्र थे। प्रत्येक क्षेत्र में पुरोहितों की राय, सहायता एवं कृपा दृष्टि आरम्भिक शहरी समाज के लिये सर्वोपरि थी।

कृषि, पशुपालन एवं व्यापार मेसोपोटामिया के आरम्भिक समाज की आजीविका के प्रमुख साधन थे। हल से खेतों को जोतने की कला से वे परिचित थे। व्यापार हेतु नावों का भी वे प्रयोग करते थे। वस्तु विनिमय द्वारा ही व्यापार सम्पन्न होता था। बेबीलोन एवं निनिवेह नगर प्रमुख व्यापारिक केन्द्र थे जिनके व्यापारिक सम्बन्ध मिस्र, भारत, अरब एवं चीन की आरम्भिक सभ्यता के नगरों से थे। गेहूँ, जौ, मक्का की खेती होती थी। भेड़-बकरी सहित अन्य जानवरों को ये पालते थे। ऊनी वस्त्र पहनते थे।

Scanned with OKEN Scanner

मेसोपोटामिया का आरम्भिक समाज तीन वर्गों में विभक्त था। प्रथम वर्ग अर्थात् उच्च वर्ग में पुरोहित, पुजारी, शासक, राजकर्मचारी आते थे। मध्यम वर्ग के तहत स्वतन्त्र नागरिक, सामन्त एवं व्यापारी आदि आते थे। निम्न वर्ग के तहत कृषक, मजदूर एवं दास आते थे।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी मेसोपोटामिया के आरम्भिक समाज ने आश्चर्यजनक प्रगति कर ली थी। उन्होंने रेखागणित के उस सिद्धान्त का पता लगा लिया था जिसे कालान्तर में पाइथागोरस प्रमेय नाम से जाना गया। वे पंचांग बनाना जानते थे। खगोल विद्या एवं ज्योतिष में उनकी रुचि थी। उनकी गणना प्रणाली में 60 का अत्यधिक महत्व था जिसे षट्दाशमिक प्रणाली कहा गया है। उन्होंने ही सर्वप्रथम एक घण्टे को 60 मिनट में एवं एक मिनट को 60 सेकण्ड में बाँटना प्रारम्भ किया था। उन्होंने वृत्त को 360 अंशों में विभाजित करना आरम्भ कर दिया था। उन्होंने एक माह को 30 एवं 29 दिनों में बाँटना प्रारम्भ कर दिया था। उनके एक वर्ष में 360 से लेकर 390 दिन तक होते थे।

प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सम्भवत: इन्होंने ही सर्वप्रथम कुम्हार के चाक का आविष्कार किया जिससे मिट्टी के बर्तनों को गोल आकार दिया गया। लट्ठों से बाँधकर बेड़े बनाये जाते थे जिन्हें नाव के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। इन्हें 'कैलक' कहा जाता था। इन कैलकों को वायु से भरी हुई मशकों से बाँधकर पानी में तैराते थे। मेसोपोटामिया के आरम्भिक समाज की सर्वप्रमुख उपलब्धि थी कीलाकार लिपि का आविष्कार। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मेसोपोटामिया के आरम्भिक समाज का स्वरूप प्रगतिशील था।

लेखन कला के उपयोग पर परिचर्चा (Debate on Uses of Writing)

मेसोपोटामिया की सभ्यता के आरम्भिक शहरों एवं आरम्भिक शहरी समाज के स्वरूप को समझने में उनकी लेखन कला के विकास ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अमेरिकी विद्वान् एस. एन. क्रामर महोदय ने सुमेरियन सभ्यता के निपुर सहित अन्य नगरों से मिट्टी की पट्टियों पर लिखे गये लेख प्राप्त किये।[1] ये लेख गीली मिट्टी की पट्टियों पर त्रिकोणात्मक नुकीली **(नरकुल)** की कलम **(नहन्नी** जैसा तेज औजार) से दबाव बनाकर लिखे जाते थे। बाद में इन मिट्टी की तख्तियों को आग पर पकाकर कड़ा कर लिया जाता था। हमारे लिये यह प्रसन्नता की बात है कि उस समय कागज एवं स्याही का आविष्कार नहीं हुआ था अन्यथा हजारों वर्ष पुराने ये लेख अभी तक पूर्वत: नष्ट हो गये होते। ये मिट्टी की पट्टियाँ अत्यन्त कड़ी होने के कारण स्थायी रहीं और आज हम इन्हीं पर लिखे लेखों द्वारा मेसोपोटामिया की सभ्यता को पहचानने में सफलता प्राप्त कर पाये हैं।

3500 ई. पू. अक्कद नगर के उदय के साथ ही हमें लेखन कला के विकास का पता चलना प्रारम्भ हो जाता है। 3200 ई. पू. के लगभग मिट्टी की पट्टियों पर लेखन का प्रचलन आरम्भ हो गया था। 2700 ई. पू. तक इस लेखन कला ने स्थायी रूप ले लिया था। चूँकि बेबीलोनियन सभ्यता में लिखित इकरारनामों को ही कानूनी मान्यता दी गई थी, इसीलिये सम्भवत: लिखित पट्टियों रूपी दस्तावेजों का महत्व बढ़ गया होगा। इससे लेखन कला के विकास को बढ़ावा मिलना स्वाभाविक ही था। सम्भवत: लेखन कला के कार्य ने एक पेशे का रूप भी ले लिया था। असीरिया के शासक को लेखन कार्य में अत्यधिक रुचि थी, वह बड़े ही गर्व से अपने आप को एक सफल लिपिक कहता था।[2] मन्दिरों में पुरोहितों द्वारा विद्यार्थियों को लेखन का व लेखन को पढ़ने का अभ्यास कराया जाता था।

कीलाक्षर लिपि (Cuneiform Script)— मेसोपोटामिया की आरम्भिक सुमेर सभ्यता द्वारा लेखन कला का आविष्कार मानव सभ्यता के लिये सबसे बड़ी देन मानी जा सकती है। उन्होंने जिस लिपि का लेखन हेतु प्रयोग किया, उसे **कीलाकार लिपि** कहा जाता है। अब प्रश्न उठता है कि आखिर सुमेर के आरम्भिक शहरी समाज का लेखन के आविष्कार की ओर ध्यान कैसे गया होगा। वस्तुत: पुजारियों को मन्दिरों की आय-व्यय का ध्यान रखना होता होगा। अत: उन्होंने सर्वप्रथम मिट्टी की पट्टियों पर मन्दिरों को मिलने वाले पशुओं की संख्या अंकित करना आरम्भ की होगी। प्रारम्भ में वे वस्तुओं का अंकन चित्रलेखों द्वारा करते थे। जैसे किसी पशु का चित्र 5 बार बना दिया जिसका अर्थ 5 पशु हो गया। वह एक जटिल पद्धति थी। अत: उन्होंने वस्तुओं के अंकन के लिये किन्हीं विशिष्ट एवं सरल संकेतों को ईजाद किया।

1 रायगोविन्द चन्द्र, **पूर्वोक्त,** पृ. 39.
2 सुशील माधव पाठक, **पूर्वोक्त,** पृ. 154.

Scanned with OKEN Scanner

वस्तुओं का बोध तो संकेतों से हो सकता है मगर अपने भावों को कैसे व्यक्त करें, यह समस्या अब आरम्भिक समाज के समक्ष आयी। अत: अब उन्होंने वस्तुओं के साथ-साथ विचारों, नामों एवं शब्दों के लिये भी विशिष्ट संकेतों को ईजाद किया। अब दो चित्रों को एक साथ बनाकर वे भाव व्यक्त करने लगे जिन्हें भावचित्र (Ideograph) कहा जाता था। दासियाँ पर्वतीय क्षेत्र से लाई जाती थीं। अत: स्त्री के चित्र के साथ यदि पर्वत (कुर) का भी चित्र बना दिया जाय तो यह चित्र दासी का भाव प्रकट करता था। कुछ वस्तुचित्रों के ये दो अर्थ भी प्रयोग में लाते थे। जैसे—हल के चित्र से हल एवं कृषक का बोध होता था। सूर्य का चित्र सूर्य एवं दिन को व्यक्त करता था।

सुमेरियन लिपि दायें से बायीं ओर लिखी जाती थी। कुछ विद्वानों के अनुसार बेबीलोनिया के लोगों ने प्रथम बार बायें से दायीं ओर लिखना आरम्भ किया। कुछ विद्वान् कीलाक्षर लिपि को पढ़ने का श्रेय फारस में नियुक्त एक अंग्रेज अधिकारी हेनरी रॉलिन्सन को जाता है। जिन्होंने बेहिस्तून अभिलेख को पढ़ने का प्रयास किया था।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि लेखन कला के विकास ने मेसोपोटामिया की सभ्यता को पहचानने, जानने, समझने में अत्यन्त की महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

काल रेखा

Scanned with OKEN Scanner